पूर्ण पाठ · निःशुल्क PDF

श्री शिव आरती

ॐ जय शिव ओंकारा

Vista Hub · vhoriginal.com
साफ टाइप · प्रिंट के लिए तैयार

आरती

पद 1–3

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।

हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।

तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

आरती (जारी)

पद 4–6

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।

चन्दन मृगमद चंदा सोहे त्रिपुरारी॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।

सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी।

सुखकारी दुःखहारी जगपालनकारी॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

आरती (समापन)

पद 7–समाप्ति

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥

ॐ जय शिव ओंकारा॥

॥ श्री शिव आरती समाप्त ॥

यह पाठ स्वयं टाइप किया गया है · Vista Hub